प्राक्कथन

मेरी समझ में इस तथाकथित विकसित सभ्यता में यदि आज भी कोई सर्वाधिक महत्वपूर्ण चीज है तो वह है 'मनुष्यतर' बने रहने की कोशिश। क्योंकि वस्तुओं की अतिक्रांति के इस दौर में मनुष्यता ही है जो तीव्रता से क्षरित हो रही है। दुनिया का प्रत्येक साहित्यक प्रयास प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कहीं–न–कहीं इसी मनुष्यता को क्षीण होने से बचा लेने का प्रयास करता है। किन्तु आज का समय विचाराधाओं के राजनीतिक आतंक और उसकी तानाशाही के जिस रूप में अपना प्रभाव छोड़ रहा है वहाँ विचार स्वातंत्र्य की बात बेमानी हो गयी है। जहाँ मार्क्सवादी हुए बिना प्रगतिशील होना या बिना गाँधीवादी हुए सत्य, अहिंसा की राह चलना शक़ के दायरे में आ जाता हो, वहाँ मानवीय विवेक, नैतिक आग्रह और जीवन की आस्था पर खतरा बढ़ जाता है। ऐसे कठिन समय में कुँवरनारायण की कविता किसी वाद की हठधर्मिता के भी एक साथ परंपरा पोषित, आधुनिक और प्रगतिशील होते हुए उसी क्षीण होते जा रहे मानवीय विवेक और मूल्यच्युत होते हुए जीवन के प्रति हमारे दायित्वबोध की चेतना जगाती है। कुँवरनारायण जैसे कवियों की जरूरत इसीलिए आज सबसे ज्यादा है। कुँवरनारायण की काव्य चिंता की इन्हीं कुछ रेखाओं पर प्रकाश डालने के आशय से उनके काव्य पर शोध करना मुझे सार्थक लगा।

'कुँवरनारायण की कविता; मिथक और यथार्थ' का अध्ययन करते समय जिन प्रस्थान बिन्दुओं से गुजरना पड़ा है उन बिन्दुओं के आधार पर शोध प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय प्रदत्त काव्य संसार में मिथक और यथार्थ के विवेचन से सम्बन्धित है। जिसमें सर्वप्रथम मिथकों की निर्मिति की व्याख्या करने वाले विभिन्न अध्ययनों एवं सिद्धान्तों की एक संक्षिप्त जानकारी दी गयी है। इन अध्ययनों में प्रमुख रूप से प्रकृतिवादी सिद्धान्त, इतिहासवादी व्याख्या, देवशास्त्रवादी व्याख्या, भाषावादी अध्ययन, धर्मशास्त्रवाद, कार्यवाद,

प्रतीकवाद एवं मनोविश्लेषणवादी अध्ययनों की चर्चा हुई है। मिथकों की निर्मित के सिद्धान्तों की संक्षिप्त चर्चा के बाद इतिहास और मिथक, मिथक और रूपक, आख्यान तथा निजंधरी कथाएं, फैंटेसी, स्वप्न, आदि के विषय में बात की गयी है। तदोपरान्त मिथक और यथार्थ के अन्तर–संबंध की व्याख्या की गयी है। इसके उपरान्त मिथकों का काव्य में रचनात्मक विनियोग सम्बन्धी अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय कुँवरनारायण के आरम्भिक काव्य संग्रह *चक्रव्यूह* एवं अन्य रचनाओं से सम्बन्धित है जिनमें *चक्रव्यूह* के बाद *तीसरा सप्तक* में संकलित कविताओं एवं १९६१ में प्रकाशित *परिवेश; हम तुम* काव्य संग्रह का अध्ययन किया गया है। इन तीनों संग्रहो का अध्ययन तीन उप–अध्यायों के अन्तर्गत हुआ है।

तृतीय अध्याय *आत्मजयी* (१९६५) की मिथकीय चेतना के विषय में है। इसमें भी तीन उप–अध्याय हैं। (I) आत्मजयी में जीवन और मृत्यु के शाश्वत प्रश्न (II) कठोपनिषद् में वर्णित यम और नचिकेता आख्यान का आत्मजयी में मिथकीय विनियोग (III) आत्मजयी में अस्तित्ववादी चेतना और मिथकीय स्मृति।

चतुर्थ अध्याय में *आत्मजयी* के बाद की रचनाओं को लिया गया है इसमें भी तीन उप–अध्याय जोड़े गये हैं–

(क) काव्य–'अपने सामने' (१९७९) 'कोई दूसरा नहीं; (१९९३), 'इन दिनों' (२००२), एवं 'वाजश्रवा के बहाने' (२००८)

(ख) निबंध

(ग) साक्षात्कार

पंचम अध्याय कुँवरानारायण के काव्य में मिथकीय संयोजन एवं काव्यदृष्टि के दो उपखण्डों में विभाजित है। मिथकीय संयोजन की दृष्टि से काव्य में उपस्थित बिम्बों, प्रतीकों तथा आधार स्रोत एवं कवि द्वारा अर्जित अनुभवों का विवेचन करने का प्रयास हुआ है। काव्य–दृष्टि को तीन महत्वपूर्ण दृष्टियों से रेखांकित किया गया है। (क) आधुनिकता बोध और

मिथकीय चेताना (ख) प्रदत्त समाज, पाठक और समकालीन जीवन की अभिव्यक्ति (ग) कविता में मानवीय मूल्यों की स्थापना की केन्द्रीय भूमिका।

कुँवरनारायण की कविता को समझने के लिए अन्य दृष्टियाँ भी हो सकती हैं। शोधप्रबन्ध के औचित्य के अनुसार उपरोक्त वर्गीकरण एक सीमित वर्गीकरण ही हो सकता है, क्योंकि साहित्य को समझने के लिए एक स्तर तक ही वैज्ञानिक वर्गीकरण किया जा सकता है। शोध की सीमा देखते हुए उपरोक्त वर्गीकरण के आधार पर कुँवरनारायण की कविता के बारे में जो राय व्यक्त की जा सकती है उसके अनुसार कहें तो कुँवरनारायण की कविता लगातार उच्चतर मानवीय मूल्यों को स्थापित करने की जिरह पैदा करने वाली है। कवि का दृष्टिकोण अत्यंत सधा हुआ और बहुआयामी प्रकृति का है जिससे वह यथार्थ को पर्त–दर–पर्त खोलता चला जाता है। कहना न होगा कि ऐसे में कवि मनुष्य की नियति के *चक्रव्यूह* से अपनी काव्य यात्रा आरम्भ करता है। क्योंकि समस्या को बिना ठीक से समझे उसकी जटिलता का अनावरण असंभव है। और आज की आधुनिक समस्याओं– पूँजीवाद से उपजे मानवीय संकट, वस्तुवादी संस्कृति की स्थापना, आत्मीय संस्कृति का लोप, विडंबनाओं का आतंक, आधुनिक यांत्रिकता का वर्चस्व, धर्म, जाति, विचारधारा, राजनीति के गलत इस्तेमाल, मानवीय सम्बन्धों के क्षरण आदि से उपजी विसंगतियों के परिवेश में कविता द्वार एक सार्थक और तर्कपूर्ण हस्तक्षेप से कवि ने मनुष्य की नियति के चक्रव्यूह को तोड़ने क प्रयास किया है। समकालीन हिंदी साहित्य में कवि की यह सार्थक उपस्थिति एक महान उपलब्धि मानी जायेगी।

एक वरिष्ठ कवि के काव्य संसार में उतरना जितना रोमांचकारी है उससे कहीं ज्याद एक वरिष्ठ कवि के निर्देशन में शोध करना। गुरुवार केदारनाथ सिंह मेरे शोध निर्देशक के रूप में एक प्रकाश स्तम्भ की तरह रहे हैं जो किसी के लिए भी उपलब्धि की बात हे सकती है। उनकी रचनाएं शोध सम्बन्धी मेरी काव्योन्मुखता का मूल आधार रही हैं। उन्हीं के आलोक में मैंने किसी काव्य पर शोध करने का मंतव्य बनाया।

सह–शोध–निर्देशक के रूप में डॉ. रणजीत कुमार साहा के सहयोगी स्वभाव के कारण ही मेरी शोध–संबंधी जटिलताओं को मुक्ति मिली। अत: उनका जितना भी आभार व्यक्त किया जाय कमतर ही होगा।

शोध को पूरा करने में मेरे परिजनों एवं प्रियजनों का सहयोग मुझे विषम परिस्थितियों में भी आश्वस्ति प्रदान करता रहा। मेरे बेड़े भाई का स्नेह मेरी प्रत्येक मुश्किल को आसान करने में सहायक रहा। उनके स्नेह के बगैर शायद यह कार्य अधूरा ही रहता।

जिन मित्रों ने अपना अपूर्व समय देकर इस शोध में मुझे लाभान्वित किया एवं तर्क–वितर्क से मेरे शोध संबंधी मंतव्यों को एक सार्थक प्रयास की ओर उन्मुख किया उनमें अभिषेक की उपस्थिति अत्यंत सराहनीय है। शोध सामग्री की उपलब्धिता की दृष्टि से अमरेन्द्र का सहयोग न भूलने लायक है। दलपत ने प्रूफरीडिंग जैसे उबाऊ कार्य करने की जहमत उठाते हुए भी कहा 'कोई बात नहीं'।

जिन अन्य और मित्रों का योगदान कहीं–न–कहीं इस शोध कार्य में सहायक रहा है उनमें *मुनीन्द्र सर* की ज्ञानपूर्ण बातें अविष्मरणीय हैं। मेरे अभिन्न मित्र अतुल एवं *शशि, तमन्ना, सत्यनारायण शास्त्री, सन्दीप गुप्ता, डॉ. भुइयाँ, अमित, धनंजय, मुनील* आदि भी कहीं–न–कही इस शोध कार्य को पूरा करने में सहायक रहे हैं इसलिए इन सभी को मैं धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

शोध के टाइपिस्ट *श्री मदन लाल जी* और उनकी *सुपुत्री रीना यादव* के बिना शायद यह कार्य पूर्ण नहीं हो पाता। उनके अथक प्रयास को मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

और अन्त में–यह शोध–प्रबन्ध अपने पिता जी को समर्पित कर रहा हूँ जो स्नेह, ममता और धैर्य की प्रतिमूर्ति के रूप में हमेशा मेरी प्रेरणा के स्रोत रहे।

धन्यवाद

प्रदीप कुमार सिंह
216, पेरियार हॉस्टल
जे.एन.यू., नई दिल्ली–110067